बेसहारा जिंदगी को बेबस राजा उलिहातु की अर्चना तिर्की के लिए "डुबते को तिनके का सहारा" बना कौशल प्रशिक्षण

जिंदगी के सफर में उतार–चढ़ाव सामान्य सी बात होती है, लेकिन कभी–कभी विधि के विधान के आगे इंसान बेबस बन जाता है। फिर हालात से टूटे मिटटी के पुतले के लिए जिंदगी की चाहत और आर्थिक हालात से निबटना सबसे बड़ी चुनौती होती है। ऐसी ही एक कहानी है, राजा उलिहातु के अर्चना तिर्की की।

राँची जिला के ग्रामीण क्षेत्र राजा उलिहातु की अर्चना तिर्की की परवरिश ग्रामीण परिवेश में हुई। मजदूर माता–पिता की संतान होने के कारण घर की माली स्थिति सामान्य से निम्न स्तर का था। पिता श्री प्रफुल्ल तिर्की की निम्न आय से भोजन, वस्त्र और आवास में से केवल पहली जरूरत यानि भरण–पोषण के लिए अनाज की जरूरत ही पूरी हो सकती थी। माँ श्रीमती बीणा तिर्की पति के साथ कदम से कदम मिलाकर केवल परिवार का भरण पोषण करने में सक्षम थी। ऐसे में परिवार में पढ़ाई–लिखाई की परिकल्पना एक स्वपन के ही समान थी। इन विपरीत परिस्थितयों के बावजूद पाँच भाई–बहनों में से तीसरे स्थान पर आने वाली अर्चना ने गाँव के ही सरकारी स्कूल से आठवीं तक की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद जिंदगी का सफर के स्वतंत्र शुरूआत करने की सोची। समयानुकूल गाँव के ही पास के बिक्की नाम के एक युवक के साथ अपनी जिंदगी गुजारने का स्वपन देखने लगी लेकिन पैसे के आभाव में अभी तक दोनों का विवाह संभव नहीं हो सका। इसी बीच कठिन परिस्थितयों वाली जिंदगी में एक नया भुचाल आया और एक सड़क दुर्घटना में विक्की की मृत्यु हो गई। कठिनाईयों का दौर अपने चरम पर था क्योंकि इन दिनों अर्चना गर्भवती थी।

इस प्रकार के विषम परिस्थतियों के बावजूद अर्चना ने अपने बच्चे को जन्म दिया और अपने बच्चे के लिए कुछ नया करने की जज्बे के साथ जिंदगी जीने लगी। इसी बीच झारखण्ड कौशल विकास मिशन सोसाईटी के प्रशिक्षण प्रदाता संस्था Dream Weavers Edutrack की नामकुम स्थित दीनदयाल उपाध्याय कौशल केन्द्र के उत्प्ररकों ने उसके गांव का दौरा किया। उन्होंने अर्चना को बताया कि वो कौशल प्रशिक्षण लेकर अपने जीवन के काले अध्याय में नई रोशनी भर सकती है। फिर क्या था अर्चना ने अपने बच्चे की जिम्मेवारी नाना–नानी को सौंपकर सिलाई मशीन ऑपरेटर का आवासीय कौशल प्रशिक्षण लेना शुरू किया। 72 दिनों के सफलतापूर्वक प्रशिक्षण के उपरांत साक्षात्कार तथा प्रायोगिक परीक्षा के आधार पर अर्चना तिर्की का चयन Loyal Textile Mills, कोविलपट्टी तमिलनाडु में हो गया। वर्तमान में अर्चना अपनी कंपनी में अपनी सेवा बखूबी दे रही है और उन्हें अपने काम के एवज में सम्मानजनक रूप से सकल रू0 13,043/– (तेरह हजार तैंतालीस रूपये) का मासिक वेतनमान प्राप्त हो रहा है। इन पैसों से अर्चना अपने बच्चे का भी खर्चा नाना–नानी के पास भेज रही है। साथ ही, 10वीं कक्षा में पहुँच चुके सबसे छोटे भाई की पढ़ाई का भी खर्चा उठा रही है। अर्चना के इस मेहनतकश प्रयास से उसके घर की माली हालत में काफी सुधार हो गया है। मेहनत और लगन से काम करने के कारण अर्चना अपने सहकर्मियों और अधिकारियों की भी प्रिय पात्र है।

इस प्रकार अर्चना की कहानी हम सबको परिस्थितियों से जूझने की प्रेरणा देती है। साथ ही, जिंदगी के काले अध्याय से अनुभव लेकर नया भविष्य गढ़ने की भी सीख देती है। झारखण्ड कौशल विकास मिशन सोसाईटी की ओर से अर्चना तिर्की को उनके उज्जवल भविष्य के लिए अन्नंत शुभकामनाएँ।

****